ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 145-148**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि : विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
2. पवन कुमार

1. शोध निर्देशक एवं सह–आचार्य, 2. शोध अध्येता– (नेट/जे.आर.एफ.), समाज कार्य विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ0प्र0), भारत

Received-03.06.2024, Revised-11.06.2024, Accepted-17.06.2024 E-mail: ymbu1504@gmail.com

सारांश: *समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि के संबंध में किया गया यह शोध समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संबंधी समस्याओं का निदान करने और उसका समाधान प्रस्तुत करने में समर्थ होगा। इस शोध में उत्तर प्रदेश में पंजीकृत गैर–सरकारी संगठनों में नियोजित समाज कार्य में उपाधिधारक समाज कार्यकर्ताओं को निदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। स्नोबाल निदर्शन विधि के आधार पर कुल 80 उत्तरदाताओं से संकलित आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निषकर्ष निकाले गये हैं। समाज कार्यकर्ताओं में आजीविका संतुष्टि का स्तर बहुत कम है, जो कि एक–चौथाई से भी कम है। आजीविका संतुष्टि के संदर्भ में यह एक गंभीर स्थिति को प्रकट करता है। वेतन, प्रोन्नति, अनुषंगी लाभ, आकस्मिक पुरस्कार और परिचालन प्रक्रिया जैसे आजीविका संतुष्टि के आयामों पर एक–चौथाई से कम संतुष्टि है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वेतन और प्रोन्नति, जो किसी भी व्यवसाय के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, उसमें संतुष्टि का स्तर न्यूनतम होना, समाज कार्यकर्ताओं में आजीविका के प्रति विलगाव उत्पन्न कर सकता है। समाज कार्यकर्ताओं के कार्य प्रदर्शन को बेहतर और उनकी क्षमताओं का पूर्ण दोहन करने के लिए वेतन और प्रोन्नति जैसे महत्त्वपूर्ण आयामों में सुधारात्मक पहल की आवश्यकता है, ताकि समाज कार्यकर्ताओं की क्षमताओं का पूर्ण लाभ समुदाय व समाज को प्राप्त हो सके।*

कुंजीभूत शब्द– आजीविका संतुष्टि, समाज कार्यकर्त्ता, समुदाय, गैर–सरकारी संगठन, समस्या, आकस्मिक पुरस्कार, परिचालन।

समाज कार्य में शिक्षितध्अशिक्षित समाज कार्यकर्ताओं द्वारा लोगों को व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक स्तर पर सेवाएं प्रदान की जाती हैं। अधिकतर समाज कार्यकर्ता किसी–ना–किसी कल्याणकारी सामाजिक संस्था के तत्त्वाधान में लोगों को व्यावसायिक सहायता उपलब्ध कराते हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि लोगों को सहायता प्रदान करने वाले समाज कार्यकर्ताओं में अपनी आजीविका के प्रति संतुष्टि का स्तर क्या है? समाज कार्य क्षेत्र में यह एक गंभीर प्रश्न है. इस विषय पर अनुसन्धान भी बहुत कम हुए हैं, जिससे कि वास्तविक आँकड़ें सामने आयें हों। चूँकि समाज कार्यकर्ताओं का समुदाय व समाज के विकास में अभूतपूर्व योगदान होता है। इसलिए उनकी आजीविका संतुष्टि व असंतुष्टि का प्रभाव उनके कार्य प्रदर्शन पर पड़ता है, जिसका अंतिम परिणाम समुदाय में सहायता प्राप्त करने वाले लोगों पर दिखता है. अतः आवश्यक है कि समाज कार्यकर्ताओं पर बढ़ती जिम्मेदारियों के आलोक में उनकी आजीविका संतुष्टि की जाँच की जाए, ताकि समाज कार्यकर्ताओं के समक्ष उत्पन्न आजीविका संबंधी समस्याओं का निदान और समाधान करके समुदाय व समाज की प्रगति और विकास में उनके योगदान को सुनिश्चित किया जा सके।

समाज कार्य एक नवीन विषय है, जिसका उद्भव व्यावसायिक समाज कार्य के रूप में इंग्लैंड में हुआ। यद्यपि कि समाज कार्य अनौपचारिक रूप में उतना ही पुराना है, जितना कि समाज. भारत में व्यावसायिक समाज कार्य का उद्भव औपचारिक स्वरुप में वर्ष 1936 ई. में सर दोराब जी टाटा ग्रेजुएट स्कूल ऑफ सोशल वर्क की स्थापना के साथ हुआ। यद्यपि कि भारत में प्रत्येक काल खण्ड में समाज कार्य का अस्तित्व रहा है। यह अपने अनौपचारिक स्वरुप में विभिन्न काल खण्डों में अपने अस्तित्व को बनाए रखा। घर, परिवार, समुदाय और समाज में लोगों द्वारा पारस्परिक सहायता की विधा रही है। समाज के कमजोर, निराश्रित, अनाथ आदि प्रकृति के लोगों की सहायता करना समुदाय के लोगों की जिम्मेदारी होती थी। चूँकि समाज परिवर्तनशील होता है। परिवर्तन के क्रम में हड़प्पा सभ्यता से लेकर वर्तमान आधुनिक समय तक का रास्ता समाज ने तय किया है। इस दौरान समाज ने बहुत कुछ पाया तो, बहुत कुछ खोया भी है। हमने प्रगतिशील मूल्यों को तो स्वीकार किया लेकिन इस दौरान सामाजिक संबंधों में शिथिलता भी आयी। परिणामस्वरूप बहुत–सी सामाजिक बुराइयां और व्यक्तिगत समस्याएं भी उत्पन्न हुयीय जैसे– अशिक्षा, भेद–भाव, गरीबी, यौन शोषण, भ्रूण हत्या, बाल विवाह, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, अकेलापन तनाव, अवसाद आदि। सामाजिक संबंधों के शिथिल होने के बाद उक्त प्रकार की सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर समाज कार्य व्यवसाय का उद्भव औपचारिक रूप में 19वीं शताब्दी में हुआ।

साहित्य समीक्षा–

1. Gad, Salah & Nazarova, Tatyana & Rzanova, Svetlana & Makar, Svetlana (2022), एस.ए.जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट में 'सोशल वर्कर्स जॉब सैटिस्फैक्सन इन पब्लिक इंस्टीट्यूशन' शीर्षक पर प्रकाशित शोध पत्र में पाया गया कि आजीविका के समाप्ति के डर से समाज कार्यकर्ताओं द्वारा आजीविका के प्रति असंतुष्टि नहीं प्रकट की जाती है।

2. Patil, C. Bhagyashree (2021), 'अ स्टडी ऑन जॉब सैटिस्फैक्सन ऑफ सोशल वर्कर वर्किंग इन हॉस्पिटल इन कर्नाटक' में पाया कि केवल 12.6 प्रतिशत समाज कार्यकनर्त्ता अपनी आजीविका सा संतुष्ट हैं।

उद्देश्य– समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि का विश्लेषण :

समस्या कथन– समाज कार्य विषय में अनेक अनुसंधानों के उपरांत भी समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि से संबंधित अनुसंधानों की बहुत कमी है, जिससे कि समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि के स्तर को जाना जा सके। एक समाज कार्यकर्ता समुदाय व समाज को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं तभी उपलब्ध करा सकता है, जब वह अपनी आजीविका और व्यवसाय से संतुष्ट हो। समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि और इसके विभिन्न आयामों के संबंध में वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक आँकड़ों को प्राप्त करने के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

लिए यह शोध बहुत प्रभावी होगा। प्रस्तुत शोध में आजीविका संतुष्टि से संबंधित समस्याओं का निदान करके उसके समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

शोध विधि– स्पष्ट और व्यावहारिक शोध विधि के अभाव में शोध कार्य गुणवत्तापूर्ण रूप से संपन्न कर पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होता है। इसलिए शोध विधि का निर्माण करना गहन चिंतन का विषय है। प्रस्तुत शोध में शोध विधि इस प्रकार है :– शोध अभिकल्प– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

समग्र– उत्तर प्रदेश में पंजीकृत गैर–सरकारी संगठनों में नियोजित समाज कार्य में उपाधिधारक समाज कार्यकार्ता समग्र के अंतर्गत आते हैं। प्रस्तुत शोध में समग्रजन अनिश्चित है, क्योंकि नियोजित समाज कार्यकर्ताओं से संबंधित आँकड़ें उपलब्ध नहीं हैं।

निदर्शन विधि– उत्तरदाताओं की उपलब्धता के संबंध में स्पष्ट ज्ञान ना होने के कारण स्नोबॉल निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक, द्वितीयक और अन्य उत्तरदाताओं द्वारा संदर्भित समाज कार्यकर्ताओं से संपर्क स्थापित करके शोध हेतु आँकड़ों को संकलित किया गया है।

निदर्श की इकाई एवं आकार– शोध में निदर्श की इकाई उत्तर प्रदेश में पंजीकृत गैर–सरकारी संगठनों में नियोजित समाज कार्य में उपाधिधारक समाज कार्यकर्त्ता हैं। निदर्श के रूप में कुल 80 उत्तरदाताओं को स्नोबॉल निदर्शन विधि के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

आजीविका संतुष्टि पैमाना (Job satisfaction scale)– प्रस्तुत शोध में पॉल ई. स्पेक्टर (Paul E- Spector) द्वारा 1985 में विकसित आजीविका संतुष्टि पैमाने का प्रयोग आजीविका संतुष्टि मापने के लिए किया गया है। पैमाने में कुल 9 आयामों (Dimensions) के आधार पर 36 प्रश्न (Items) दिए गये हैं। पैमाने में सम्मिलित आयाम इस प्रकार हैं– भुगतान (Pay), प्रोन्नति (Promotion), पर्यवेक्षण (supervision), अनुषंगी लाभ (Fringe Benefit), परिचालन प्रक्रिया (Operating procedures), आकस्मिक पुरस्कार (Contingent rewards), सहकर्मी (Co-workers), कार्य प्रकृति (nature of work), संचार (Communication)। प्रत्येक पैमाने के अंतर्गत 4 प्रश्न दिए गये हैं। आजीविका संतुष्टि से संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण पॉल ई. स्पेक्टर द्वारा विकसित मैन्युअल के आधार पर किया गया है।

आँकड़ा संकलन की विधि– आँकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली विधि के अंतर्गत गूगल फॉर्म का प्रयोग किया गया है। स्नोबॉल निदर्शन विधि के अंतर्गत प्राथमिक, द्वितीयक और अन्य उत्तरदाताओं द्वारा संदर्भित समाज कार्यकर्ताओं से संपर्क स्थापित करके, उन्हें गूगल लिंक भेजा गया और उनसे गूगल फॉर्म भरने का आग्रह करके आँकड़ों को संकलित किया गया।

विश्लेषण विधि– गूगल फॉर्म से प्राप्त आँकड़ों को एम.एस. एक्सेल सॉफ्टवेयर में कॉपी किया गया। इसके बाद आँकड़ों को विश्लेषण योग्य बनाने के लिए संपादित किया गया और उन्हें कूटसंकेतित रूप में लिखा गया। जनांकिकी संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण एम.एस. एक्सेल सॉफ्टवेयर की सहायता से प्रतिशत के आधार पर किया गया और पॉल ई. स्पेक्टर (Paul E- Spector) द्वारा 1985 में विकसित आजीविका संतुष्टि पैमाने के विश्लेषण के लिए स्पेक्टर द्वारा विकसित मैन्युअल का प्रयोग किया गया तथा समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुषित के संदर्भ में उचित निष्कर्ष निकला गया।

आँकड़ों का विश्लेषण– आँकड़ों का विश्लेषण अधोलिखित है–

तालिका संख्या–1 : उत्तरदाताओं का लिंग

लिंग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पुरुष समाज कार्यकर्त्ता	52	65%
महिला समाज कार्यकर्त्ता	28	35%
कुल	**80**	**100%**

तालिका में लिंग संबंधी आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध में सर्वाधिक भागीदारी पुरुष समाज कार्यकर्ताओं की है, जो लगभग दो–तिहाई है।

तालिका संख्या–2 : उत्तरदाताओं की आयु

आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
20-वर्ष 30	39	48.75%
31-40 वर्ष	32	40%
41 वर्ष या अधिक	9	11.25%
कुल	**80**	**100%**

तालिका में दिए गये उत्तरदाताओं की आयु संबंधी आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शोध में सम्मिलित सर्वाधिक (48.75%) उत्तरदाता 20–30 आयु वर्ग के हैं तथा सबसे कम 41 वर्ष या अधिक आयु के हैं। अतः प्रस्तुत शोध में सम्मिलित कम आयु के उत्तरदाता अधिक हैं।

तालिका संख्या–3 : उत्तरदाताओं की मासिक आय

मासिक आय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
10000 से कम	7	8.75%
10001-20000	24	30%
20001-30000	29	36.25%
30001-40000	10	12.5%
40001-50000	8	10%
या अधिक 50001	2	2.5%
कुल	**80**	**100%**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उपर्युक्त तालिका में उल्लेखित आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक (36.25%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 20001–30000 के मध्य ह।. क्रमशः घटते क्रम में 30% उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001–20000 के मध्य और 12.5% उत्तरदाताओं की मासिक आय 30001–40000 के मध्य है। न्यूनतम 2.5% उत्तरदाताओं की मासिक आय 50001 या अधिक है. अतः स्पष्ट है कि समाज कार्यकर्ताओं को उतना अच्छा वेतन नहीं मिलता है, जितना कि वह योग्यता रखते हैं।

तालिका संख्या–4 : समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि (Job Satisfaction) की स्थिति

पैमाना (scale)	प्रतिशत (Percentage)
संतुष्ट (Satisfied)	24.05%
अस्पष्ट (ambivalent)	43.61%
असंतुष्ट (Dissatisfied)	32.34%
कुल (Total)	100.00%

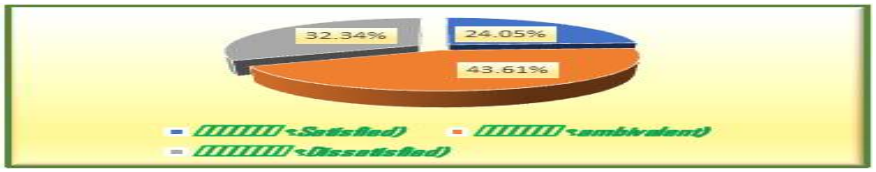

आरेख–1 : आजीविका संतुष्टि (Job Satisfaction)– उपर्युक्त तालिका के अंतर्गत छः बिंदु लिकर्ट पैमाने के आधार पर आजीविका संतुष्टि संबंधी आँकड़े दिए गये है। आजीविका संतुष्टि मापने के लिए पॉल ई. स्पेक्टर द्वारा विकसित पैमाने का प्रयोग किया गया है। इसका विश्लेषण भी स्पेक्टर द्वारा निर्मित मैन्युअल के आधार पर किया गया है। जो निम्नवत है :–

तालिका में प्रस्तुत समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि संबंधी आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सामज कार्यकर्ताओं में अपनी आजीविका के प्रति असंतुष्टि अधिक है, क्योंकि केवल 24.05% उत्तरदाता ही अपनी आजीविका से संतुष्ट हैं और 32.34% उत्तरदाता असंतुष्ट जबकि 43.61% उत्तरदाता अस्पष्ट हैं, अर्थात उनसे प्राप्त आँकड़ें यह प्रदर्शित नहीं करते हैं कि वह संतुष्ट हैं अथवा असंतुष्ट. अतः उन्हें भी उन्हें भी अपनी आजीविका से असंतुष्ट माना जा सकता है। निष्कर्षतः यह कहना समीचीन होगा कि समाज कार्यकर्ताओं में आजीविका संतुष्टि निम्न स्तर की है, जो कि लगभग एक–चौथाई है।

तालिका संख्या–5 : समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि का विभिन्न आयामों (Dimension) के आधार पर विश्लेषण

क्रम	आयाम (Legend Entry 3 ensions)	संतुष्ट (Satisfied)	अस्पष्ट (ambivalent)	असंतुष्ट (Dissatisfied)	कुल (total)
1.	भुगतान (Pay)	12.63%	23.81%	63.56%	100%
2.	प्रोन्नति (Promotion)	22.54%	26.42%	51.04%	100%
3.	पर्यवेक्षण (Supervision)	46.12%	27%	26.88%	100%
4.	अनुषंगी लाभ (Fringe Benefits)	20.77%	24.33%	54.9%	100%
5.	आकस्मिक पुरस्कार (Contingent rewards)	16.85%	51.89%	31.26%	100%
6.	परिचालन प्रक्रिया (Operating conditions)	9.78%	38.33%	51.89%	100%
7.	सहकर्मी (Coworkers)	54%	29.12%	16.88%	100%
8.	कार्य प्रकृति (Nature of work)	68.15%	18.92%	12.93%	100%
9.	संचार	40.87%	35.61%	23.52%	100%

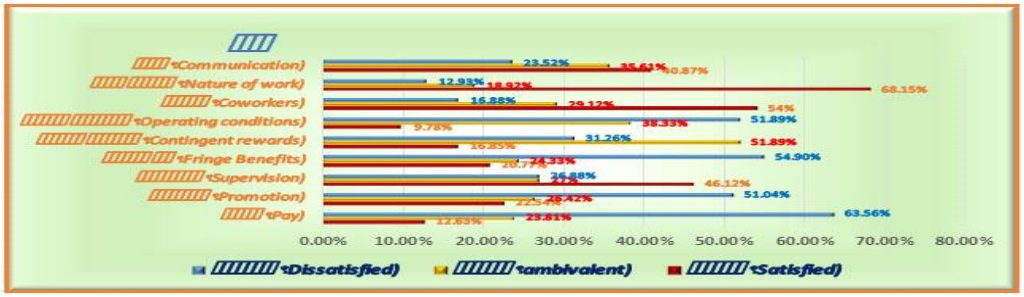

आरेख–2 : आजीविका संतुष्टि के आयाम (क्पउमदेपवद)– प्रस्तुत तालिका में आजीविका संतुष्टि के संबंध में कुल 9 आयामों के आध ाार पर विश्लेषण से प्राप्त परिणाम दिए गये हैं। विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं :–

1. भुगतान– विश्लेषण से स्पष्ट है कि केवल 12.63ः उत्तरदाता ही प्राप्त होने वाले भुगतान से संतुष्ट हैं। जो कि न्यूनतम है. 63.56ः असंतुष्ट हैं, जो कि सर्वाधिक है. 23.81ः अस्पष्ट की श्रेणी में हैं. निष्कर्षतः समाज कार्यकर्ताओं को भुगतान बहुत कम मिलता है, क्योंकि सर्वाधिक (63.56ः) समाज कार्यकर्ता प्राप्त होने वाले भुगतान से असंतुष्ट हैं और केवल 12.63ः ही संतुष्ट हैं।

2. प्रोन्नति– 51.04% समाज कार्यकर्ता प्रोन्नति से असंतुष्ट हैं, जो कि आधे से अधिक है जबकि केवल 22.54% उत्तरदाता ही प्रोन्नति संबंधी प्रावधानों से संतुष्ट हैं। निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि समाज कार्यकर्ताओं में प्रोन्नति के प्रति संतुष्टि भी बहुत कम

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

(22.54%) है जो कार्य के प्रति उनके लगाव को कम कर सकता है।

3. पर्यवेक्षण– समाज कार्यकर्ताओं में पर्यवेक्षण के प्रति संतुष्टि सर्वाधिक 46.12% है जो कि अन्य आयामों की तुलना में ठीक है. केवल 26.88% समाज कार्यकर्ता ही पर्यवेक्षण के प्रति असंतुष्टि दिखलाते हैं। इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना ठीक होगा कि समाज कार्यकर्ताओं में पर्यवेक्षण के प्रति संतुष्टि मध्यम स्तर की है।

4. अनुषंगी लाभ– केवल 20.77% समाज कार्यकर्ता ही अनुषंगी लाभों से संतुष्ट हैं और सर्वाधिक 54.9% समाज कार्यकर्ता असंतुष्ट तथा 24.33% अस्पष्ट हैं. विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि बहुत ही कम (20.77%) समाज कार्यकर्ताओं को अनुषंगी लाभ प्राप्त होते हैं, जो उनकी आजीविका संतुष्टि को न्यून करता है।

5. आकस्मिक पुरस्कार– केवल 16.85% उत्तरदाता प्राप्त होने वाले आकस्मिक पुरस्कारों से संतुष्ट हैं, जो कि बहुत कम है।

6. परिचालन प्रक्रिया– इस आयाम पर विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि कुल 80 उत्तरदाताओं में से केवल 9.78% उत्तरदाता ही संतुष्टि प्रकट करते हैं, जो कि न्यूनतम है. यह समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि को न्यून करता है।

7. सहकर्मी– 54% समाज कार्यकर्ता सहकर्मियों के प्रति संतुष्ट हैं, जो कि सर्वाधिक है जबकि 16.88% समाज कार्यकर्त्ता सहकर्मियों से असंतुष्ट हैं. सहकर्मियों के प्रति संतुष्टि का स्तर समाज कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति लगाव उत्पन्न करता है और सकारात्मक माहौल प्रदान करता है।

8. कार्य प्रकृति– सभी आयामों में सर्वाधिक 68.15% समाज कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया कि वह कार्य प्रकृति से संतुष्ट हैं और केवल 12.93% समाज कार्यकर्ताओं ने ही कहा कि वह कार्य प्रकृति से असंतुष्ट हैं। निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि लगभग दो–तिहाई (66.15%) समाज कार्यकर्ता कार्य प्रकृति से संतुष्ट हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज कार्यकर्ताओं में अपने कार्य प्रकृति के प्रति उच्च संतुष्टि है, जो उनकी व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च करता है।

9. संचार– समाज कार्यकर्ताओं में होने वाले संचार के प्रति 40.87% संतुष्टि है और 23.52% असंतुष्टि है। यद्यपि कि संतुष्टि का स्तर आधे से कम है लेकिन अन्य आयामों की तुलना में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि संचार से संबंधित संतुष्टि माध्यम स्तर की है।

निष्कर्षतः संपूर्ण रूप से यह कहना उचित होगा कि आजीविका संतुष्टि के सभी 9 आयामों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज कार्यकर्ताओं में भुगतान, प्रोन्नति, अनुषंगी लाभ, आकस्मिक पुरस्कार और परिचालन प्रक्रिया जैसे आजीविका संतुष्टि के आयामों पर संतुष्टि का स्तर न्यूनतम है। यह एक–चौथाई (25:) से भी कम है. दूसरी ओर पर्यवेक्षण, सहकर्मी, कार्य प्रकृति और संचार संबंधी आयामों पर संतुष्टि का स्तर एक–तिहाई से अधिक और दो–तिहाई से कम है. इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महत्त्वपूर्ण आयामों पर समाज कार्यकर्ताओं की आजीविका संतुष्टि निम्नतम है। निम्नतम आजीविका संतुष्टि समाज कार्यकर्त्ताओं के कार्य प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे इनकी योग्यताओं का पूर्ण दोहन नहीं हो पाता है।

सुझाव–

1. कार्य एवं योग्यता के अनुरूप वेतन निर्धारित किया जाना चाहिए।
2. कल्याणकारी संस्थानों में कुछ पदों को केवल समाज कार्य में उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों के लिए आरक्षित कर देना चाहिए।
3. शैक्षिक संस्थान क्षेत्रीय कार्य (फील्ड वर्क) के लिए प्रतिष्ठित गैर–सरकारी संगठनों से अनुबंध स्थापित करें।
4. शैक्षिक संस्थानों को चाहिए कि वह समाज कार्य के विद्यार्थियों को क्षेत्रीय कार्य (फील्ड वर्क) नियमित कराएँ और उसकी मॉनिटरिंग तथा रिपोर्ट नियमित प्राप्त करते रहें।
5. श्रम कानूनों को कठोरता पूर्वक कल्याणकारी संस्थानों में लागू करना चाहिए जिससे कि समाज कार्यकर्ताओं के हितों को संरक्षित किया जा सके।
6. संस्थानों में पदोन्नति के स्पष्ट नियम होने चाहिए।
7. समाज कार्यकर्ताओं को अपना कार्य प्रदर्शन बेहतर करने के लिए नित नए कौशल और ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए।
8. समाज कार्यकर्ताओं की वेतन वृद्धि अनिवार्य रूप से वार्षिक स्तर पर होनी चाहिए।
9. कल्याणकारी संस्थानों के लिए अवकाश के स्पष्ट और समान नियम लागू होने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. (PDF) Social workers' job satisfaction in public institutions (researchgate.net)
2. Patil, C. Bhagyashree (2021), 'A Study On The Job Satisfaction Of Social Workers Working In Hospitals In Karnataka' Ph.D. thesis, Department of Social Work, Karnataka State Akkamaha Devi Women's University, Vijayapura.
3. Job Satisfaction Survey - Paul Spector
4. Job satisfaction - Wikipedia
5. What is social work? | University of Chicago News (uchicago.edu)

*****